

ANCIENT INDIAN HISTORY & ARCHAEOLOGY, PATNA UNIVERSITY, PATNA

सोहन घाटी

PG / M.A. 3rd Semester

CC-11, Pre And Proto History Of India And Indian Potteries

Dr. Manoj Kumar

Assistant Professor (Guest)

Dept. of A.I.H. & Archaeology,

Patna University, Patna-800005

Email- dr.manojaihcbhu@gmail.com

PATNA UNIVERSITY, PATNA

सोहन घाटी

भारत के निम्न पुरापाषाण काल से मानव जीवाश्म नहीं प्राप्त हुए हैं। पुरावशेषों के रूप में सिर्फ पाषाण पाषाण उपकरण ही प्राप्त हुए हैं। यह उपकरण जमीन की सतह से और नदी वेदिकाओं से प्राप्त हुए हैं। इन नदी-वेदिकाओं का निर्माण पर्यावरण में परिवर्तन के फलस्वरूप हुआ है। इन नदी-वेदिकाओं से पाषाण उपकरणों के साथ-साथ पशु जीवाश्मों की भी प्राप्ति होती है। भारत की निम्न पुरापाषाण काल की संस्कृति को उपकरण प्रकार व प्रसार क्षेत्र के आधार पर दो वर्गों में विभाजित किया जाता है :-

1. Chopper- Chopping / Pebble Tool Culture
2. Handaxe Culture

Chopper- Chopping / Pebble Tool Culture - पाकिस्तान में प्रवाहित होने वाली सिंधु की सहायक सोहन घाटी में किए गए प्रागैतिहासिक अन्वेषण के फलस्वरूप सर्वप्रथम प्रकाश में आई थी। अतः इसको सोहन संस्कृति के नाम से भी जाना जाता है। पश्चिमोत्तर भारत का क्षेत्र चार पहाड़ियों से घिरा हुआ है। उत्तर में हिमालय, दक्षिण में सौल्टररेंज, पूर्व में शिवालिक पहाड़ियां तथा पश्चिम में पीर-पंजाल की पहाड़ियां हैं। यह संपूर्ण क्षेत्र के पठारी पोतवार के नाम से जाना जाता है। जिस क्षेत्र से सोहन नदी निकलती है वह पोतवार क्षेत्र कहलाता है। यह हिमालय की तलहटी का क्षेत्र है। यह क्षेत्र सिंध से झेलम तक विस्तृत है। हिमालय की संरचना Middle Miocene से Pleistocene के बीच रखी गई है तथा तीन क्षेत्रों में विभाजित किया गया है:-

1. वृहद हिमालय जहां ऊंची पर्वत मालाएं हैं।

सोहन घाटी

2. छोटी हिमालय पर्वत श्रृंखला ।

3. भारत-पाकिस्तान सीमा से लगा बाहरी हिमालय ।

बाहरी हिमालय के भाग की संरचना को भूगर्भशास्त्री Siwalik Formation की संज्ञा देते हैं । Siwalik का यह जमाव Early Miocene से लेकर Middle Pleistocene Period के बीच हुआ । शिवालिक के इस संपूर्ण भागों में बांटा जाता है :-

Siwalik Deposition	
Upper Siwalik	Boulder Conglomerate } II Himalayan Glaciation
	Pinjor } I Himalayan Glaciation
	Tatrot } Pleistocene
Middle Siwalik	Dhok-Pathan Zone Middle Pliocene
	Nagri Middle Pliocene
Lower Siwalik	Chinji Lower Pliocene
	Kamlial

ऊपरी शिवालिक जमाव पोतवार क्षेत्र की संरचनाओं हेतु उल्लेखनीय है क्योंकि इन्हीं जमावों के ऊपर प्रतिनूतनकाल के जमाव मिले हैं । शिवालिक के ऊपरी जमाव को छोड़कर सभी भूतात्विक जमावों से जीव-जंतुओं के जीवाश्म मिलते हैं । Tatrot Zone का निर्माण Quick River

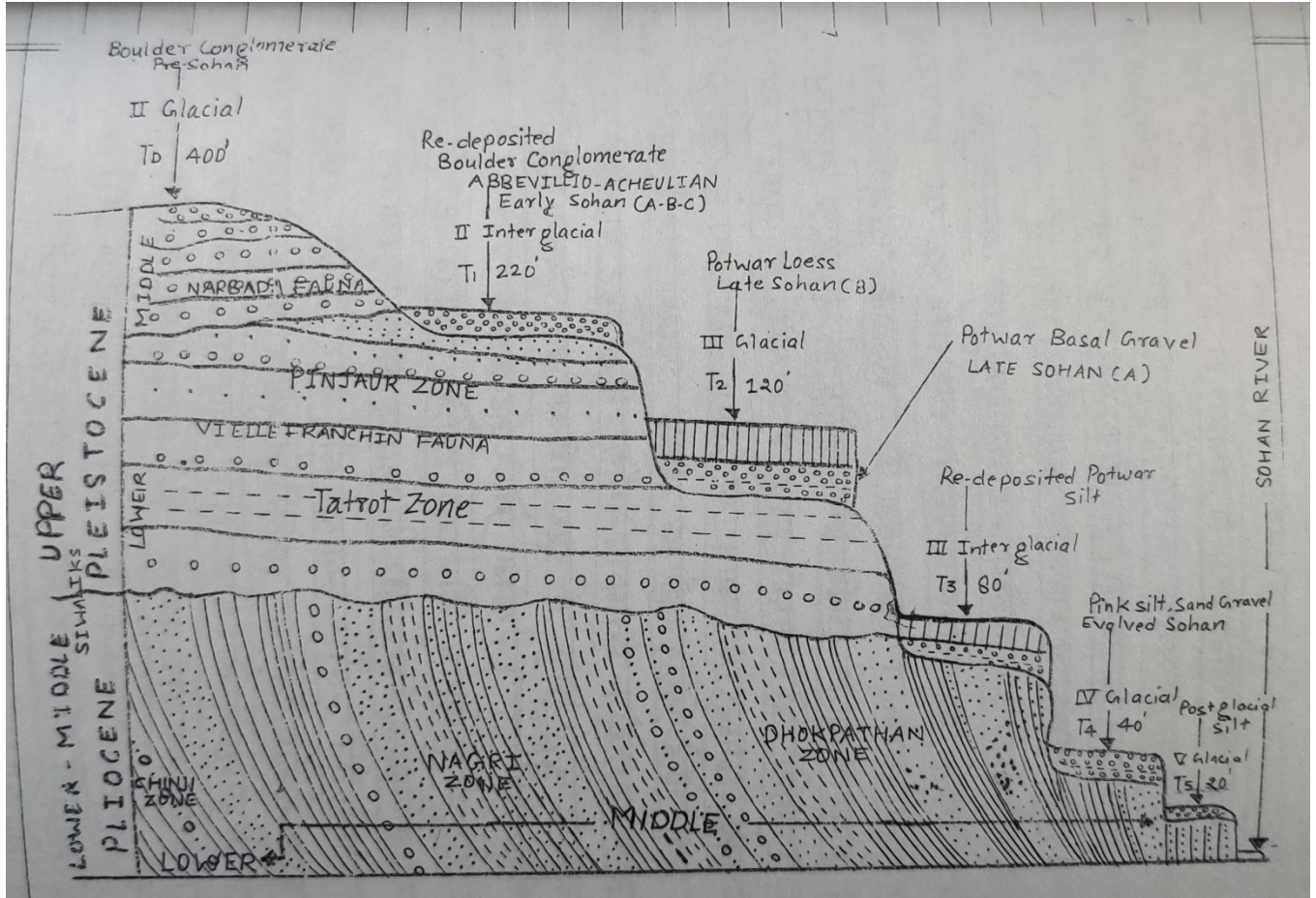
सोहन घाटी

Deposition के कारण हुआ। Middle Siwalik के ऊपर Tatrot Rock का जमाव मिलता है। Tatrot Zone में ब्राउन रंग Basal Conglomerate और Conglomerate Sand Stone पाई जाती है। इसका निर्माण सामान्यता सॉफ्ट सैंड स्टोन के साथ Conglomerate तथा ब्राउन Silt की परत से हुआ है। यहां से Elephas, Equas, Boss की Fossilized Bone भी प्राप्त हुई है जो कि आद्र जलवायु की ओर संकेत करते हैं। टर्टल और क्रोकोडाइल की भी प्राप्ति आद्र जलवायु की ओर इशारा करती है। चूकी टेट्रोट जोन का निर्माण Quick River डिपोजिशन से हुआ है अतः कहीं-कहीं टेट्रोट जोन से मैमल की फॉसिलाइज्ड Bone भी प्राप्त हुई है जो कि ढोक पठान जोन का है। पिंजौर जोन का निर्माण गर्म जलवायु के कारण हुआ। इसके जमाव में सिल्ट तथा सैंड के साथ-साथ डस्ट की मोटी परत मिलती है जो गर्म जलवायु को प्रदर्शित करती है। यह क्षेत्र कृषि के लिए बहुत अच्छा था।

सोहन नदी जो कि सिंधु की सहायक नदी है यह बाहरी हिमालय पर्वत श्रृंखला के तलहटी से भाग से होकर गुजरती है। शिवालिक की तलहटी में स्थित पोतवार का पठारी भाग निम्न पुरापाषाण काल की दृष्टि से महत्वपूर्ण है। सन् 1935 ई. में Helmut'd Terra तथा टी.टी. पीटरसन के निर्देशन में येल कैंब्रिज अभियान दल ने पोतवार के पठारी भाग का विस्तृत सर्वेक्षण किया था। इस अभियान दल की खोज के परिणाम स्वरूप 1939 में सोहन घाटी की रिपोर्ट स्टडीज ऑन द आइस एज इन इंडिया एंड एसोसिएट्स ह्यूमन कल्चर के नाम से प्रकाशित हुई। सिंधु की सहायक सोहन का अध्ययन भूतात्त्विक तथा पुरातात्विक संदर्भ में

सोहन घाटी

किया गया है। इस नदी घाटी में 5 सोपानों का अस्तित्व मिलता है। यह सभी पोतवार के पठारी भाग के अंतर्गत है। सोहन नदी में स्थित नदी सोपानों का सर्वप्रथम अध्ययन एच.डी. डेरा तथा टी. टी. पीटरसन ने किया था।



T_D वेदिका - इस वेदिका का निर्माण जमाव की प्रक्रिया के कारण हुआ है। यहां से Boulder Conglomerate का जमाव प्राप्त होता है। इस काल से किसी तरह का जीवाश्म नहीं मिला है। सोहन की इस वेदिका का जमाव नर्मदा के सदृश्य है जहां से Elephas Namadicus के फॉसिल प्राप्त हुए थे। साथ में इस जमाव की तुलना करेवा जमाव से की जाती है, जो कि कश्मीर के द्वितीय हिमयुग से संबंधित है। इस वेदिका का समय निम्न प्रतिनूतन या

सोहन घाटी

मध्य प्रतिनूतन काल माना जाता है। बोल्डर कांग्लोमरेट का यह जमाव आदियाल, चौमुख, जम्मू, मलकपुर आदि स्थानों से प्राप्त हुआ है। यहां से प्राप्त उपकरणों को **Pre-Sohan** के नाम से जाना जाता है। ये उपकरण भारी व भौंडे हैं। यहां से प्राप्त उपकरणों पर पुनर्गठन नहीं मिलता है। इनका निर्माण क्वाटर्जॉयड पाषाण पर हुआ है।

T₁ वेदिका- इस वेदिका का निर्माण द्वितीय अन्तर्हिम काल में कटाव की प्रक्रिया के फलस्वरूप हुआ। कटाव की यह प्रक्रिया अतिवृष्टि के कारण नहीं बल्कि भूस्खलन के कारण हुई। पर्यावरण का यह परिवर्तन गर्म जलवायु की ओर इशारा करता है जिसे इंटरग्लेशियल व इंटर फ्लूवियल कहते हैं। भारतीय प्रायद्वीप के पशुओं के लिए यह जलवायु संभवतः अनुकूल रही होगी यही कारण है कि नर्मदा व गोदावरी घाटी से *Elephas Namadicus*, *Bos Namadicus*, *Hippopotamus*, *Horse* आदि पशुओं के जीवाश्म मिले हैं। इस वेदिका से प्राप्त उपकरणों को **Early Sohan** के नाम से जाना जाता है। इन उपकरणों को तीन समूहों में रखा गया है। **Early Sohan A, B तथा C**। A समूह के उपकरण गोल आकार के हैं तथा घिसे हुए हैं। इन पर **Platination** है। B समूह के उपकरण पर **Platination** तो है पर घिसे हुए नहीं हैं। C समूह के उपकरण पर **Platination** कम है तथा यह अच्छे उपकरण हैं। उपकरणों में पेबल, फ्लैक, स्क्रेपर आदि महत्वपूर्ण हैं। पेबल टूल्स के निर्माण के लिए चिकनी सतह वाले गोल पत्थर व गोल सतह वाले पेबल तथा छोटी सतह वाले बोल्डर का प्रयोग किया गया है। चौतरा, आदियाल, खसलकला प्रमुख पुरास्थल हैं।

सोहन घाटी

T₂ वेदिका – इस वेदिका का निर्माण जमाव की प्रक्रिया के कारण तृतीय हिम काल में हुआ। इस वेदिका के जमाव को दो भागों में बांटा गया। नीचला जमाव जिसे पोतवार बेसल ग्रेवल के नाम से जाना जाता है। इसके ऊपर लोएस तथा सिल्ट की परत है जिसे पोतवार लोयस के नाम से जानते हैं। यहां से प्राप्त उपकरणों को स्तरीकरण तथा उनके आकार-प्रकार के आधार पर दो भागों में विभाजित किया गया है- Late Sohan A तथा Late Sohan B। फ्लैक के निर्माण में लवालवा तकनीक का प्रयोग किया गया है। T₂ वेदिका से कैमल, हॉर्स तथा बुल आदि पशुओं के जीवाश्म प्राप्त हुए हैं, जो अर्ध शुष्क जलवायु के द्योतक हैं।

T₃ वेदिका - इसका निर्माण तृतीय अन्तर्हिम काल में कटाव की प्रक्रिया के फलस्वरूप हुआ। इस वेदिका से किसी भी प्रकार के उपकरण नहीं प्राप्त हुए हैं।

T₄ वेदिका - इसका निर्माण चतुर्थ हिमकाल में निक्षेपण की प्रक्रिया के द्वारा हुआ। इसका निर्माण पिंग सिल्ट, सेंड तथा ग्रेवल के कारण हुआ। इस वेदिका से प्राप्त उपकरणों को विकसित सोहन या Evolved Sohan उपकरणों की श्रेणी में रखा जाता है। इस वेदिका से प्राप्त फ्लैक पतले हैं। यहां से हैंडेक्स, क्लीवर, कोर, फ्लेक तथा चाँपर-चाँपिंग उपकरण प्राप्त हुए हैं। यह उपकरण पिंडी घोर तथा ढोक पठान आदि स्थानों से प्राप्त हुए हैं।

चौतरा उद्योग - यह उद्योग ग्लेशियल ग्रेवल के जमाव से प्राप्त हुआ है जो कि T₂ वेदिका के समान है। इन उपकरण समूहों में घिसे हुए तथा अच्छे उपकरणों का सम्मिश्रण मिलता है। चौतरा से प्राप्त उपकरण अत्यंत

सोहन घाटी

महत्वपूर्ण है। यहां से प्राप्त उपकरणों के तकनीकी विकास को ध्यान में रखकर पूरे समूह को तीन भागों में विभाजित किया गया है-

1. इस समूह में अत्यंत घिसे हुए प्री सोहन अर्थात् प्राक् सोहन प्रकार के Abbevillian उपकरण प्राप्त होते हैं। यह T_D वेदिका के समान काल के हैं।
2. इस समूह में अपेक्षाकृत कम घिसे हुए मिडिल एश्यूलियन प्रकार के उपकरण प्राप्त हुए हैं। यह समूह T_1 वेदिका के समय का है।
3. तृतीय समूह में Advanced Acheulian जैसे Handaxe, Cleaver उपकरण है। इसे T_2 वेदिका के समान रखा जा सकता है।